चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	02	07-08

धान की सीधी बिजाई वाले खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान : प्रो. समर सिंह

भास्कर न्यूज | हिसार

पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा क्योंकि पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना 'मेरा पानी-मेरी विरासत' को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरुआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा। इसके अलावा धान की सीधी बिजाई वाले पौधों की जड़ें मृदा में काफी नीचे तक चली जाती हैं, जो गहराई से भी पानी ले लेती हैं और कई बार समय पर सिंचाई न हो पाने के कारण भी पौधे मरते नहीं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	02	05-08

बदलती जलवायु व ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय : वीसी

भास्कर न्यूज | हिसार

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जोकि बहुत ही चिंतनीय है।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रो. समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्वभर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि एचएयू के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दे।

एचएयू के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. सहरावत

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। उन्होंने कहा कि एचएयू हिसार के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	01	06-08

राजस्थान से बिखरा टिड्डी दल हिसार जिले में घुसा

प्रशासन ने 10 टीमें बनाईं, रात को फायर ब्रिगेड की गाड़ियों से किया छिड़काव

भास्कर न्यूज|हिसार/बालसमंद/सिवानी

राजस्थान के बाद टिड्डी दल ने अब हिसार जिले में भी दस्तक दे दी है। सोमवार को शाम करीब पांच बजे टिड्डियों का दल तलवंडी बादशाहपुर के अलावा बासड़ा और मुकलान, पनिहार, गोरछी, चौधरीवास, गांवड़, सरसाना आदि गांव में आ पहुंचा। किसान भगाने के लिए थाली लेकर खेतों में पहुंच गए। वहीं कृषि विभाग के अधिकारी भी अलर्ट हो गए हैं। टिड्डी दल पर काबू पाने के लिए कृषि विभाग ने अलग से दस टीमों का गठन किया है। देर रात जिला प्रशासन की ओर से बॉर्डर क्षेत्र में पहुंचे टिड्डी दल पर नियंत्रण पाने के लिए हिसार से फायर ब्रिगेड की गाड़ियां बुलाई गई और उनसे इलाके में छिड़काव करवाया गया। इसके साथ ही प्रशासन ने स्थानीय किसानों के ट्रैक्टरों के माध्यम से भी छिड़काव करवाया। देर रात तक एसडीएम हिसार राजेंद्र सिंह, डीडीए डॉ. विनोद फोगाट, तहसीलदार जयवीर सिंह, खंड कृषि अधिकारी राजेंद्र श्योराण, कृषि विकास अधिकारी राकेश कुमार सहित कई अधिकारी मोर्चा संभाले हुए थे। खंड कृषि अधिकारी राजेंद्र श्योराण ने बताया कि विभाग की टीमें टिड्डी दल से निपटने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

टिड्डी दल का हमला

तलवंडी बादशाहपुर, बासड़ा, मुकलान, पनिहार, गोरछी, गांवड़, चौधरीवास, सरसाना में दिखा टिड्डियों का दल

गांव गांवड़ के खेतों के ऊपर से उड़ता टिड्डी दल।

वहीं दूसरे दिन सिवानी मंडी क्षेत्र में भारी मात्रा में टिड्डी ने फसलों पर आक्रमण किया। टिड्डियों ने गांव लीलस, सैनीवास, देवसर, खेड़ा सहित एक दर्जन गांव में आंतक मचाया। जिसके बाद हिसार की तरफ रूख कर लिया।

दुनिया की खतरनाक कीट होती हैं टिड्डियां

हिसार एचएयू के किट विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार व कृषि विशेषज्ञ डॉ. अनुराग सांगवान, डॉ. गगन जोशी ने बताया कि दुनियाभर में टिड्डियों की 10 हजार से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं, लेकिन भारत में केवल चार प्रजाति ही मिलती हैं। इसमें रेगिस्तानी टिड्डा, प्रव्राजक टिड्डा, बंबई टिड्डा और पेड़ वाला टिड्डा शामिल हैं। इनमें रेगिस्तानी टिड्डों को सबसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है। ये हरे-भरे घास के मैदानों में आने पर खतरनाक रूप ले लेते हैं।

फसलें बचाने के लिए दस टीमों का गठन किया

टिड्डी दल हिसार के गोरछी, पनिहार, चौधरीवास, गावड़ समेत कई गांव में पहुंच चुका है। किसानों की फसल को बचाने के लिए दस टीमों का गठन किया गया है। रात में कीटनाशक दवाई का छिड़काव किया जाएगा। किसान टिड्डियों की सूचना तुरंत ही विभाग को दें। टीम मौके पर पहुंचने का प्रयास करेंगी। –अरूण यादव, नोडल अधिकारी, टिड्डी नियंत्रण, कृषि विभाग हिसार

टिड्डियों के बारे में यह भी जानें

एचएयू के कीट विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार व हांसी के कृषि रक्षा अधिकारी डॉ. अनुराग सांगवान व डॉ. गगन जोशी के अनुसार

- 15 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ती है टिड्डियां
- 150 किलोमीटर तक की दूरी नापने में सक्षम
- 1 दिन में 8 करोड़ के झुंड में टिड्डियां फसलों पर कर सकती हैं हमला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.07.2020	04	06-08

इस सप्ताह एचएयू प्रशासन की बैठक में एग्जाम को लेकर होगा फैसला

यूजीसी से लेकर आईसीएआर से भी एग्जाम को लेकर मांगे गए थे सुझाव

हिसार| एचएयू में कई कोर्स की बची परीक्षाओं के न होने पर परीक्षार्थी असमंजस में हैं। एग्जाम होंगे या नहीं, इसकी चिंता सता रही है। एचएयू के नए वीसी प्रो. समर सिंह ने हाल ही में चार्ज ग्रहण किया है। वीसी प्रो. समर सिंह ने बताया कि परीक्षाओं के संबंध में यूजीसी से लेकर आईसीएआर और अन्य बोर्ड से भी सुझाव मांगे गए थे। एक सप्ताह के अंदर ही विवि प्रशासन की बैठक कर एग्जाम की स्थिति को क्लीयर किया जाएगा। प्रयास रहेगा कि कोरोना काल में छात्र एवं छात्राओं को किसी भी तरह की परेशानी न हो।

परीक्षा से पहले ये हैं चुनौतियां

- सामाजिक दूरी के नियमों से केंद्रों की संख्या तय करना।
- जिन केंद्रों पर कोविड-19 सेंटर बने हैं, उन्हें बदलना।
- उन कॉलेजों को चिह्नित करना जो हॉट स्पॉट क्षेत्र में है।
- केंद्रों पर सेनिटाइज एवं थर्मल स्क्रीनिंग की व्यवस्था करना।
- ड्यूटी को शिक्षकों-कर्मचारियों को राजी करना।

इसके अलावा नए सत्र में ऑनलाइन पढ़ाई के संबंध में विचार किया जाएगा। कई तरह के ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मैटीरियल तैयार कराए गए हैं।

विवि ने परीक्षाओं की तैयारी की शुरू: विवि प्रशासन का कहना है कि विश्वविद्यालय में क्वारेंटाइन सेंटर बनाया गया है। यदि परीक्षार्थी परीक्षा देने के लिए आते हैं तो उनके भी कोरोना की चपेट में आने की आशंका है। जिसको लेकर अभी तक परीक्षा की तारीख निर्धारित नहीं की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	29.07.2020	11	02-07

हकृवि कुलपति ने किसानों को समस्याएं व उनके समाधान बताए

खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान

- धान की सीधी बिजाई सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना मेरा पानी-मेरी विरासत को बढ़ावा देने में सहायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा। पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा। उक्त विचार हकृवि कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना मेरा पानी-मेरी विरासत को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरूआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा।

यह करें उपाय

सीधी बिजाई वाली फसल रोपाई वाली फसल से पीली दिखाई दे, तो इसके समाधान के लिए 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट 21 प्रतिशत या 6.5 किलोग्राम यूरिया की पहली विभाजित दर 33 प्रतिशत प्रति एकड़ के हिसाब से खेत में डालें। खाद हमेशा सिंचाई के बाद नमी वाले खेत में ही डालें व यूरिया की पहली किश्त बिजाई के 28 दिन बाद डाल सकते हैं।

सिंचाई व रोगों के लिए ये तरीका अपनाएं

हकृवि के सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. सतबीर सिंह पूनिया ने बताया कि फसल के नए पत्ते पीले पड़ रहे हों तो एक किलोग्राम फेरस सल्फेट का 100 लीटर पानी में घोल बनाकर खेत में डालें। फिर भी समस्या का समाधान न हो तो पौधे को जड़ से उखाड़कर फेंक दें अथवा नष्ट कर दें। उन्होंने कहा कि अगर फसल की बिजाई के समय खेत में अच्छी नमी हो तो पहली सिंचाई को काफी दिनों बाद दिया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	29.07.2020	11	04-08

बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय

- हकृवि में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार
- कुलपति प्रो. समर बोले, तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है। जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है।

साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार हकृवि कुलपति प्रो. समर सिंह ने विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को महत्व दे।

प्रदेश में बढ़ा वृक्ष आवरण

हकृवि अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में एक गोष्ठी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्तुबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आयूपीएन की फांन्टेनब्लियू नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भाभा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आयूसीएन रखा गया जिसका वैश्विक मुख्यालय ग्लांड स्विटजरलैंड में बनाया गया। उन्होंने कहा कि हकृवि के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण बारे जागरूक हो रहे हैं।

प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी

कृषि वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस दिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। यह समस्या केवल किसी एक देश या देशों के समूह तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनिया व विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बढ़ते खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सत विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि विवि का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है।

निरन्तर में पारिस्थितिक असंतुलन

कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	29.07.2020	04	03-05

ग्लोबल वार्मिंग से पिघल रहे मीठे पानी के ग्लेशियर

एचएयू में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिससे तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इस वजह से पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

कुलपति ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनःचक्रण करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस दौरान अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरएस ढिल्लो आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	29.07.2020	02	01-05

बदलती जलवायु व ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार

हिसार, 28 जुलाई (ब्यूरो): ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है, जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफैसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए।

कुलपति ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्वभर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दे।

विश्वविद्यालय के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में पर्यावरण संरक्षण पर एक गोष्ठी आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्तूबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनैशनल यूनियन फॉर प्रोटैक्शन ऑफ नेचर) की फ्रांन्टेनब्लियू नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भाभा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.सी.एन. रखा गया जिसका वैश्विक मुख्यालय ग्लांड (स्विटजरलैंड) में बनाया गया। उन्होंने कहा कि चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रयास के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. ढिल्लो

वानिकी विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। इस समस्या ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनिया व विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बढ़ते खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सतत् विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है।

कुलपति प्रोफैसर समर सिंह, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व डॉ. आर.एस. ढिल्लो।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी (दिल्ली)	28.07.2020	--	--

धान की सीधी बिजाई वाले खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान : कुलपति प्रो. समर सिंह

हिसार, 28 जुलाई (राज पराशर) : पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा क्योंकि पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना 'मेरा पानी-मेरी विरासत' को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरूआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा। इसके अलावा धान की सीधी बिजाई वाले पौधों की जड़ें मृदा में काफी नीचे तक चली जाती हैं, जो गहराई से भी पानी ले लेती हैं और कई बार समय पर सिंचाई न हो पाने के कारण भी पौधे मरते नहीं। प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि अगर सीधी बिजाई वाली फसल रोपाई वाली फसल से पीली दिखाई दे, तो इसके समाधान के लिए 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट(21 प्रतिशत्) या 6.5 किलोग्राम यूरिया की पहली विभाजित दर (33 प्रतिशत्) प्रति एकड़ के हिसाब से खेत में डालें। खाद हमेशा सिंचाई के बाद नमी वाले खेत में ही डालें व यूरिया की पहली किश्त बिजाई के 28 दिन बाद डाल सकते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि किसान मिट्टी की जांच करवाकर ही फसल में जरूरत अनुसार पोषक तत्व डालने चाहिए ताकि फसल पर कम खर्च हो और उत्पादन् भी अच्छा मिले।

किसानों को फसल में आने वाली समस्याएं व उनके समाधान बताए

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	28.07.2020	--	--

हिसार/अन्य

पांच बजे 3

हकृवि में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे है जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए है। उन्होंने कहा कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनःचक्रण करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। उन्होंने आम जन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दे।

विश्वविद्यालय के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक

संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में एक गोष्ठी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्तुबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ नेचर) की फांटेनब्लियू नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भाभा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.सी.एन. रखा गया जिसका वैश्विक मुख्यालय ग्लांड (स्विटजरलैंड) में बनाया गया। उन्होंने कहा कि चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे है।

सतत् विकास के लिए प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. आर.एस. ढिल्लो

वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। यह समस्या केवल किसी एक देश या देशों के समूह तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनिया व विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बढ़ते खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सतत् विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वत्ता और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है। यह विभाग वर्तमान ग्लोबल वार्मिंग और बदलती जलवायु को ध्यान में रखकर अखिल भारतीय कृषि वानिकी समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों जैसे मेड़ पर पेड़ व वृक्ष सुधार, आनुवांशिक पौध सामग्री का उत्पादन करने के लिए नर्सरी प्रौद्योगिकी पर शोध कार्य कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	28.07.2020	--	--

बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषयः कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

एचएयू में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनःचक्रण करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है।

हिसार। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व डॉ. आर.एस. ढिल्लो के फाइल फोटो।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि अपशिष्ट प्रबंधन हेतु नवाचार केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आम जन से आह्वान किया कि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन की बजाय उनके संरक्षण को अधिक महत्व दे।

विश्वविद्यालय के प्रयासों से बढ़ा प्रदेश में वृक्ष आवरण : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में एक गोष्ठी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्तुबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ नेचर) की फांन्टेनब्लियू नामक जगह पर स्थापना की। उस समय डॉ. होमी जहांगीर भाभा उस गोष्ठी में शामिल थे। 1956 में इसका नाम बदल कर आई.यू.सी.एन. रखा गया जिसका वैश्विक मुख्यालय ग्लांड (स्विटजरलैंड) में बनाया गया। उन्होंने कहा कि चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रयासों के कारण हरियाणा में वृक्ष आवरण बढ़ रहा है और लोग प्रकृति के संरक्षण के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

सतत् विकास के लिए प्रकृति को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. आर.एस. ढिल्लो

वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। यह समस्या केवल किसी एक देश या देशों के समूह तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। प्राकृतिक दुनिया व विश्व को अनिश्चित प्रथाओं से बढ़ते खतरे का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए सतत् विकास को प्राप्त करने के लिए प्रकृति को संरक्षित करना बहुत जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	28.07.2020	--	--

बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय: प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूज: हिसार, 28 जुलाई। ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता जताते हुए कहा कि इससे विश्व भर में पारिस्थितिक असंतुलन फैल रहा है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, जंगल, जंगली जीवन, जीवाश्म ईंधन और खनिज मानव शोषण के कारण प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा कि

वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए स्वस्थ वातावरण बनाना आवश्यक है। इसलिए विश्व भर के लोगों में प्राकृतिक संसाधनों की बचत के महत्व को समझने के साथ-साथ इनके पुनर्चक्रण करने, संरक्षित करने और इसे नुकसान पहुंचाने के परिणामों को समझने के लिए जागरूकता बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से स्थिति यहां तक पहुंच गई कि पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता महसूस हुई। इसी को लेकर फ्रांस ने 1947 में एक गोष्ठी पर्यावरण संरक्षण पर आयोजित कर इसकी रूपरेखा बनाने की कोशिश की। 5 अक्तुबर 1948 में फ्रांस ने यूनेस्को के साथ मिलकर इसकी रूपरेखा तैयार की और आई.यू.पी.एन. (इन्टरनेशनल यूनियन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ नेचर) की फांन्टेनब्लियू नामक जगह पर स्थापना की। वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो ने कहा कि वर्तमान में प्रकृति और पर्यावरण की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का वानिकी विभाग प्राकृतिक संसाधनों की महत्वत्ता और प्रदेश के किसानों के हित को ध्यान में रखकर कई वर्षों से शोध कार्य कर रहा है। यह विभाग वर्तमान ग्लोबल वार्मिंग और बदलती जलवायु को ध्यान में रखकर अखिल भारतीय कृषि वानिकी समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों जैसे मेड़ पर पेड़ व वृक्ष सुधार, आनुवांशिक पौध सामग्री का उत्पादन करने के लिए नर्सरी प्रौद्योगिकी पर शोध कार्य कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	28.07.2020	--	--

एचएयू के इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्रों को शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के दिए टिप्स

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 28 जुलाई : कोरोना महामारी से निपटने के लिए इसके प्रति लोगों का जागरूक होना बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर कोरोना महामारी के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया की अगुवाई में दौरा किया गया। इस दौरान लड़कों के त्रिवेणी व लड़कियों के यमुनोत्री इंटरनेशनल छात्रावास में जाकर विदेशी विद्यार्थियों को जागरूक किया। इस दौरान सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नियमित योग, प्राणायाम व अन्य योग क्रियाओं द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा ध्यान द्वारा भी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस कोरोना महामारी से निपटने के लिए केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन किया जाना बहुत जरूरी है। इसके लिए सामाजिक दूरी, मास्क, व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने बताया कि इस समय विश्वविद्यालय के दोनों इंटरनेशनल छात्रावासों त्रिवेणी व यमनोत्री में करीब 47 विद्यार्थी रह रहे हैं। कोरोना वायरस और मौसम को ध्यान में रखते हुए एयर कंडीशनर के उपयोग से बचा जाएं और अपने कमरों के दरवाजे और खिड़कियां प्राकृतिक हवा के लिए ज्यादातर खुले रखे जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का कैंपस अस्पताल 24 घंटे उनकी सेवा के लिए खुला है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जब भी उन्हें खांसी, गले में खराश, सिरदर्द, बुखार आदि किसी प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो तुरंत इसकी जानकारी अस्पताल में दें और इसकी जांच करवाएं। सहायक छात्र कल्याण निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि लड़कियों के छात्रावास में म्यंमार, नेपाल, भूटान, तंजानिया, फिजी व नाइजीरिया से 19 लड़कियां जबकि लड़कों के छात्रावास में अफगानिस्तान, म्यंमार आदि देशों से 28 विद्यार्थी रह रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित व्यायाम करने व ताजा फल सब्जियों के प्रयोग करने की सलाह दी। इस दौरान छात्र कल्याण निदेशक के साथ सहायक छात्र कल्याण निदेशक (महिला छात्रावास) डॉ. मंजू मेहता, वार्डन डॉ. अनिल वत्स व डॉ. जयन्ती टोकस भी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जुल्म की जंग	27.07.2020	--	--

विश्वविद्यालय के इंटरनेशनल छात्रावासों में विद्यार्थियों को कोरोना संकट के प्रति किया जागरूक

Posted on July 27, 2020 by Admin |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: कोरोना महामारी से निपटने के लिए इसके प्रति लोगों का जागरूक होना बहुत जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा.निर्देशों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर कोरोना महामारी के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में इंटरनेशनल छात्रावासों में छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया की अगुवाई में दौरा किया गया। इस दौरान लडक़ों के त्रिवेणी व लड़कियों के यमुनोत्री इंटरनेशनल छात्रावास में जाकर विदेशी विद्यार्थियों को जागरूक किया। इस दौरान सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नियमित योग, प्राणायाम व अन्य योग क्रियाओं द्वारा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा ध्यान द्वारा भी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस कोरोना महामारी से निपटने के लिए केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन किया जाना बहुत जरूरी है। इसके लिए सामाजिक दूरी, मास्क, व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। डॉ. देवेंद्र सिंह दहिया ने बताया कि इस समय विश्वविद्यालय के दोनों इंटरनेशनल छात्रावासों त्रिवेणी व यमनोत्री में करीब 47 विद्यार्थी रह रहे हैं। कोरोना वायरस और मौसम को ध्यान में रखते हुए एयर कंडीशनर के उपयोग से बचा जाएं और अपने कमरों के दरवाजे और खिड़कियां प्राकृतिक हवा के लिए ज्यादातर खुले रखे जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का कैंपस अस्पताल 24 घंटे उनकी सेवा के लिए खुला है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जब भी उन्हें खांसी, गले में खराश, सिरदर्द, बुखार आदि किसी प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो तुरंत इसकी जानकारी अस्पताल में दें और इसकी जांच करवाएं। सहायक छात्र कल्याण निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि लड़कियों के छात्रावास में म्यंमार, नेपाल, भूटान, तंजानिया, फिजी व नाइजीरिया से 19 लड़कियां जबकि लडक़ों के छात्रावास में अफगानिस्तान, म्यंमार आदि देशों से 28 विद्यार्थी रह रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित व्यायाम करने व ताजा फल सब्जियों के प्रयोग करने की सलाह दी। इस दौरान छात्र कल्याण निदेशक के साथ सहायक छात्र कल्याण निदेशक (महिला छात्रावास) डॉ. मंजू मेहता, वार्डन डॉ. अनिल वत्स व डॉ. जयन्ती टोकस भी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जुल्म की जंग	22.07.2020	--	--

पेड़ों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाएं किसान

Posted on July 22, 2020 by Admin |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बालसमंद स्थित अनुसंधान फार्म पर मंगलवार को किसान-वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशानुसार किसानों को खरीफ फसलों व आधुनिक तकनीकों की जानकारी देने के उद्देश्य से इस गोष्ठी का आयोजन किया गया। वन महोत्सव के अवसर पर इस गोष्ठी का आयोजन वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. ढिल्लो की देखरेख में किया गया। इस गोष्ठी में बालसमंद गांव के 22 किसानों ने भाग लिया जिसमें विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को खरीफ फसलों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और किसानों द्वारा इससे संबंधित पूछे गए विभिन्न सवालों के जवाब भी दिए। कोविड-19 के चलते इस गोष्ठी में सामाजिक दूरी व मास्क का विशेष ध्यान रखा गया। किसानों को संबोधित करते हुए बालसमंद अनुसंधान फार्म के इंचार्ज डॉ. विरेंद्र दलाल ने कहा कि मौजूदा समय में कैर, रोहिड़ा, खेजड़ी जैसे वृक्षों की प्रजातियां लगभग विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में इन प्रजातियों को बचाना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इन प्रजातियों की औषधीय महत्ता बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि पहले किसान अपने खेतों में हल चलाते समय ऐसे पेड़ों को बचा लेते थे लेकिन आजकल किसानों ने इन प्रजातियों के पेड़ों को जानकारी के अभाव में नष्ट कर दिया है। इसके अलावा किसानों को संबोधित करते हुए चारा विभाग से डॉ. सतपाल ने शुष्क क्षेत्रों में चारे की फसलों व खरीफ मौसम में लगने वाली फसल बाजरा, मूंग, ग्वार इत्यादि की वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बालसमंद जैसे शुष्क क्षेत्र के लिए धामण घास, बाजरा व ज्वार चारे की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धामण घास में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है जिससे किसानों के दुधारु पशुओं का दूग्ध उत्पादन् बढ़ जाता है। रामधन सिंह बीज फार्म से डॉ. राजेश कथवाल ने बताया कि मानसून के दौरान वर्षा के कारण ग्वार व मूंग फसलों को बोने के लिए अगस्त माह का पहला सप्ताह उपयुक्त है। शुष्क क्षेत्रों में इस सप्ताह में इन फसलों को बोया जा सकता है। साथ ही ग्वार के बीज का उपचार स्ट्रैप्टोसाइक्लिन से 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर के हिसाब से किया जाना चाहिए जिससे बैक्टिरियल लीफ ब्लाईट को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके अलावा किसानों को बहुउद्देशीय वानिकी पेड़ों की नर्सरी व ट्रांसप्लान्टेशन प्रबन्धन पर भी जानकारी दी गई। गोष्ठी उपरांत सभी किसानों को सामाजिक दूरी रखते हुए नीम के वृक्ष प्रदान किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	**28.07.2020**	--	--

धान की सीधी बिजाई वाले खेत में फसल घनत्व कम है तो घबराएं नहीं किसान : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

July 28, 2020 - Rakesh - Haryana News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को धान की सीधी बिजाई वाली फसल में आने वाली समस्याएं व उनके समाधान बताए

धान की सीधी बिजाई सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना 'मेरा पानी-मेरी विरासत' को बढ़ावा देने में सहायक

हिसार : 28 जुलाई

पहली बार धान की सीधी बिजाई करने वाले किसानों को खेत में फसल घनत्व कम दिखाई दे रहा है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। जल्द ही उनका खेत फसल से भर जाएगा क्योंकि पहली सिंचाई के बाद ही पौधों का ऊपरी भाग तेजी से बढ़ेगा और अगले 20 दिनों में खेत भरा-भरा नजर आएगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को कृषि संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार काफी हिस्से में धान की सीधी बिजाई की गई है, जो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना 'मेरा पानी-मेरी विरासत' को बढ़ावा देने में कारगर साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बिजाई वाले खेत में शुरुआती दौर में खेत खाली दिखाई देता है जिससे किसानों के मन में शंका पैदा होती है कि उनकी फसल का घनत्व कम हो गया है

और फसल का उत्पादन अच्छा नहीं मिल पाएगा। लेकिन पहली सिंचाई देर से देने पर पौधे पहले जड़ों को बढ़ाते हैं और उसके बाद ही ऊपरी भाग में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती है। सिंचाई के अगले 20 दिनों में ही खेत भरा-भरा नजर आने लगेगा। इसके अलावा धान की सीधी बिजाई वाले पौधों की जड़ें मृदा में काफी नीचे तक चली जाती हैं, जो गहराई से भी पानी ले लेती हैं और कई बार समय पर सिंचाई न हो पाने के कारण भी पौधे मरते नहीं। प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि अगर सीधी बिजाई वाली फसल रोपाई वाली फसल से पीली दिखाई दे, तो इसके समाधान के लिए 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट(21 प्रतिशत) या 6.5 किलोग्राम यूरिया की पहली विभाजित दर (33 प्रतिशत) प्रति एकड़ के हिसाब से खेत में डालें। खाद हमेशा सिंचाई के बाद नमी वाले खेत में ही डालें व यूरिया की पहली किश्त बिजाई के 28 दिन बाद डाल सकते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि किसान मिट्टी की जांच करवाकर ही फसल में जरूरत अनुसार पोषक तत्व डालने

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	**28.07.2020**	--	--

बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग चिंता का विषय : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

July 28, 2020 • Rakesh • Haryana News

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों के विचार

हिसार : 28 जुलाई

ग्लोबल वार्मिंग के कारण दिन-प्रतिदिन तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण तूफान और समुद्र का स्तर भी बढ़ रहा है। साथ ही मीठे पानी के ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे पृथ्वी पर जीवन का खतरा मंडरा रहा है, जो बहुत ही चिंतनीय है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' पर व्यक्त किए।